

1. BHAIRAVĀGNI-YAGYA-VIDHI
Short Title 2. ŚIRĀHUTI VIDHI

SECT. NEVARI LANG.

NEPAL-GERMAN MANUSCRIPT PRESERVATION PROJECT

Place of Deposit: Rāma Karmācārīya

Accession No. 1311/PIN/BL M/10

Manuscript No.

Rev. TANTRA

Running No. I. 474

TITLE (acc. to Colophon/Catalogue):

ĀḌAU → 1. ATHA BHĀIRAVĀGNI-YAGYA-ĀRAMBHAM
KARIKṢETE // HOMA PIMDĀNE 'SĪLO-HOMA-YĀYA-VIDHI //
2. ITI ŚIRĀ HOMA-// HOMA PIMDĀNE VIDHI
SAMĀPTAḤ. 3. ITI ŚIRĀHUTI VIDHI SAMĀPTAḤ.

AUTHOR:

No. of leaves: 39 Decript. Size in cm 38.4 x 22.2 Rel. No. I. 29
Date of Binding: 24.9.79 Script - Devanagari - Nepali - Tibetan - Maithili
Remarks: paper - Tamar - paper, damaged by worms - rats - water - smoke - breaking
Colour - white - red

Date: 13. 10. 1979

SCRIBED: JAYANTA RĀJA

869



प्रकृमायेव

[illegible]

मरुलगाज्जलनयका॥ वनसिंभलज्जामका सकलरितीं॥ कलसुवलि म्यासा नयका
 क्लृप्तदवने॥ पंचगुणका क्लृप्तदवने॥ यनकलसवाय भुनका वने अग्निकुं प्रव सपा
 मवसप भनका वगुनृपा या या मख पा मल का सा व र्ध स सि दा वा॥ मा स न के स॥ कुं मा म
 यल्ल अ न म नि मि ला (य ने क ल मा र्ग ने स दा ने न वा य ज्ज ने ना॥ भा हा ल का म म मा नी ज्ज ना ती
 क्लानन मि नि क्ल म द ने ज्ज ने लो मि स या सो क ल॥ श्री स र्ग य प र्ण ने म॥ व नि स र्ग य सो प र्ण
 वि मि॥ ॥ अ य गु न र्पा॥ व सा च क आ स न ने न ज्ज न वि आ च के॥ गु न द व स क स्या त न ने म क्लृप्त
 व मा द मा र्ग ने म॥ प र्ण ने म॥ ली ख पा म ल का व गु न व वा ज्ज ने म॥ ॥ अ य गु न स र्ग य नि
 ता ज्ज ने म॥ व ल्लि क्ल ती न गु न र्पा य द क स द य के॥ ॥ ना च य के॥ व द ने दि स व

एत प व न ने न मा गु न व नि म ली न मा॥ गु न व ज्ज ल य वि न ली मा द न सा ज्ज ना॥ गु न व प र्ण ने म
 वा क्लृप्त न न क्लृप्त॥ गु न व वा क्लृप्त ने न मा॥ ली ख वा स न का या व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त न वा
 यि वा क्लृप्त सा र्ग य म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥
 ज्ज र्ग न्मा यि पा स र्ग य म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥
 र्ध क र्ग य॥ ॥ गु न र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥
 य म र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ गु न र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥
 म र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥
 क्लृप्त मा र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥ व र्ध स र्ग य नि म ली क्लृप्त॥

[illegible]

नयतमावलि॥ ॐ शुक्राय नमः॥ वलि॥ वाहू॥ यद्वि मया न सा ॐ शान्ति मेवाय नमः॥ वलि॥ ॐ नमो व
यनमावलि॥ वाहू॥ उदये नमः॥ ॐ केतुव नमः॥ वलि॥ ॐ ज्ञान नमः॥ वलि॥ ॐ पादिषा ॥ ज्ञानाय नमः॥
यवहा ॥ ॥ मृगयामा मरिचि पातु मय वं गुं नमः॥ गनेय नमः॥ स मय दू कयुज जी नमः॥ मरु ॥ ज्ञानाय नमः॥
मरिचि ॐ निपिच पातु मय दू कयुज जी नमः॥ ॥ गनेय नमः॥ मरु ॥ ज्ञानाय नमः॥ मरु ॥ ज्ञानाय नमः॥
उतयाय ॥ मरु ॥ ज्ञानाय नमः॥ ॥ यद्वि मय गुलीयाय ॥ यद्वि मय गुलीयाय ॥ वलि॥ ॐ नमः॥ ॐ पादिषा ॥ ज्ञानाय नमः॥
यद्वि मय गुलीयाय ॥ यद्वि मय गुलीयाय ॥ ॥ गनेय नमः॥ ॥ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
काय नमः॥ ॐ ज्ञानाय नमः॥ ॐ मरु ॥ ज्ञानाय नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
गनेय नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

लोकाय नमः॥ क्रमदे लममय उनी॥ पिकान सयुजने॥ यत्त स॥ ॐ ज्ञां मा सब ल्या य खोला नै वम गउ॥ विधा
 ने ल्याय नमः॥ वायु तमा ॐ ॥ धि वने ल्याय नमः॥ ॐ ॥ जो वक्रि नू काय॥ ॐ ॥ दे ख नू ॥ धा य ॥ मी मरु न वा व
 क्रिये वा दया॥ ॐ ॥ जो ॥ जो ॥ प्र मू न्द म हा ने न वायु स व न ल्याय नमः॥ ॐ ॥ नै म च नो गो म नी य उ न॥ ॐ ॥
 वा गो श्व ने नमः॥ ॐ ॥ जो ॥ गो श्व नी नमः॥ न ना ॐ नी॥ ॐ ॥ अ न गी य य मी का नै य व द वे वि वि वि॥ ॐ ॥ नै म
 ला द वी म द म्ना ना म नै के ना॥ धि॥ ॐ ॥ म क व क्का च यि त व वि द म्नि ती॥ द न वा य मी म र्वा य मी म
 च नो॥ द वा वा य म म ख य न या द्वा ग वि रा व च॥ ॥ क न म ल्म ॐ न वि वि न य म ॐ वि ॐ नै य ॐ न म
 याय नमः॥ ॐ ॥ या दि म द न मी य ॥ ॥ मि मि ना या थ का या व म व क स द व न न॥ ॐ ॥ स क स न य न स क पा द न
 मि मि ना या थ नै स य क्का नि म्ना द मि ना का या व म य य क्का ना॥ ॐ ॥ या थ म नै म ॥ ॐ ॥ जो ॥ जो ॥

कंद म हा ने न वायु नमः॥ ॥ ति मि क्की॥ सा य॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 ॐ ॥ मा द नै ॐ ॥ क व ची य द्वा॥ अ व गु० ने॥ ॐ ॥ थ म व रु म्का न॥ अ मि म्ना य॥ ॐ ॥ वि दे त न मी य म्ना नै म
 द स य न॥ ॐ ॥ म मी क वा द मि मि का या व म्ना ला स न॥ म न॥ ॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 ॐ ॥ जो क्का य द मि मि रु द या य नमः॥ ॐ ॥ या दि॥ ॐ ॥ स व जे म्ना नै य रु॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 ॐ ॥ जो क्का य द मि मि रु द या य नमः॥ ॐ ॥ या दि॥ ॐ ॥ स व जे म्ना नै य रु॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 म न॥ ॐ ॥ ॐ ॥ स व वि॥ ॐ ॥ म मी क वा द मि मि रु द या य नमः॥ ॐ ॥ या दि॥ ॐ ॥ स व जे म्ना नै य रु॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 य रु मी वि प्रे क्का नी॥ नै म म्ना नै नै व रु यो॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥ ॐ ॥ अ क्का य रु॥
 वि म र्ज न॥ ॐ ॥ न य न॥ ॐ ॥ मि मि ति मि क्की॥ च नु र्म क्का न॥ ॐ ॥ व द न॥ ॐ ॥ ॐ ॥ जो ॥ अ मि य म न॥ ॐ ॥ नै म

[illegible][illegible]

पानवर्तुर्वाक्यकान्तवृत्तनती॥ रसयानवविशान्दशुक्रकर्मसुली॥ उं जां वं द्यायती न
खंडेन संप्रसूता धनं वृक्षाप्यना ॥ तनाकमुसावाहिन रागसुसुपया प्रप्रागिहया ॥ उं जां
उताशायनमाभ्याना ॥ अन्ननं पृथुलीकाकं दूष्मतादिह गते नती ॥ विददो मयतीकोणी कं मानंदपुत्रय
उं जां विष्णुवनमोषडं गेव संप्रयुज ॥ ॥ यवपुतिमिहू सिनिमदनमा सनिश सासदइकगोकि कय
नियमिनि सप्यन पुतिमिहू पना ॥ गेउध सिनका वादवडं सा प्रमकशगिहू कय सियादवतम ॥ सगा
वक्रापुगीति प्रय समनवलथ वक्रवतवक्राडव सा सखचला सप्यधीति ॥ गयाव ॥ चधुनादि एउ त ॥ धन
वक्रापुगीति सप्यना ॥ ॥ सा सा लाकया लायनूं मं अग्नि वासकी प्रासयिहार्थे ला लाश्रवया धन
पाथता लाक पास सका ॥ ॥ कं कं वा मा दय ॥ उं जां अमुयद ॥ सखन हाय म सप्यना ॥ ॥

दवकश तथियकं गुं वा ॥ उं जां अलत लायनमा कशया सतनु वापास सथियका ॥ उं जां विद्यान लायनमा
कशमल्लतनु वा सल्लथियका ॥ उं जां मिवन लायनमा कशवातगु वाचा ना एउत ॥ उं जां सल्लतमा
शुवायुजना ॥ उं जां मिवायनमा एउन ॥ ॥ यव न सिदना उला यवीना यथा ॥ उं जां कव वायदं ॥ मिमुगिकान
थिता ॥ उं जां मुकं वा सानमा एउन ॥ ॥ गुवा सल्लेव पायउ धं वाव गुवा न हायकाव सप्यनिक ला हाय
सदयाव गुवा न सिपु लानदयाव गुवा या मानमने ॥ ॥ सख गुवा वादन कं गुदास कावपना म सतया कं वन
यजा सतन ॥ सवकि अल्लया नूति गुवा शम तविमि ॥ उं जां अमुयद ॥ ॥ अवक वरु वा सा मत्रय ॥ सखन हा
यम सप्यना सप्यनिक ॥ ॥ अवक सप्यनता मनु ॥ उं जां रुदयायनमा विधव वरु सप्यन पायन धं वाव सा
पा ॥ तिलिहू अदि ॥ ॥ वरु स्याव ॥ ॥ सवकावु अयि ॥ ॥ अदि ॥ ॥ सवकावु सप्यन ॥ ॥ ॥ यन कानक ॥ ॥

या जानाय नमदवासांसादायाविनत। याविनती। उं जी हूं वा मय वाय अया मासांसादा। यविनेत यविन
 दा। उं जी हूं अया नायन लू जायं न्। माताय सादा। वाविनत नमद॥ उं जी हूं जी हूं माताय नमद
 ख अया वा मयदव सदा जा नाय सादा। यां कलित यं कलित म॥ उं जी हूं जी हूं माताय नमद
 नमद सदा जा नाय सादा। यां कलित यं कलित म॥ उं जी हूं जी हूं माताय नमद
 जां हूं ने सा नाय दकि भव काय नमा। थन अदकि भव कं मयदव मां कल अनाम नयाय हं मां यय न
 याया नमा जिदा मं मां॥ हूं ही लं याय सादा॥ मां॥ लू क न काय सादा॥ पृथी पुं न काय सादा॥ अयय
 हूं कल य सादा॥ ने नमा॥ हूं पुं राय सादा॥ पं हूं मां अमि न काय सादा॥ वाय॥ वं हूं वं न काय सादा
 म॥ जी हादि पन॥ य न मां॥ हूं लं हिलं अं क न काय सादा॥ मां॥ पृथी॥ लू क न काय सादा॥

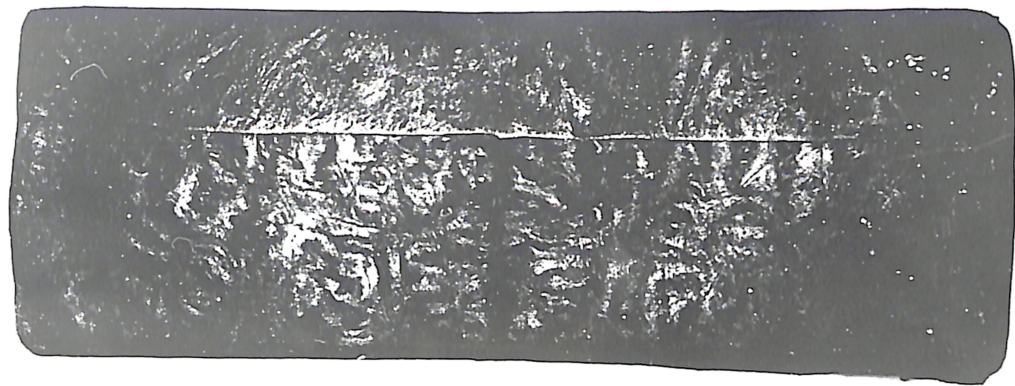
[illegible]

कृष्णपर्याया मदी॥ अथियि... ययाया ननायु मादुमि विर्या॥ कृष्णवदकाभगा जा मदी॥ चरु...
 यथात॥ ०० न्नादि लाकवा ला... कृष्ण कदि दभक उ॥ कृष्ण न्यानि अ... का...
 वा॥ ०० पववलि जा कनगा॥ अ... लकी॥ पववला नव...
 विर्याय प्रमरु॥ दभक को... मरु...
 अ... काद व॥ ०० जो जो...
 लावक्रा क... मरु की॥ न...
 ०० भिका॥ जो नोमि मरु को मज ननी अकि वला सीरु विम॥ अ...
 विमि॥ नना ला मया उ भुदि॥ ०० ०० अ...

सुत्र २

दिवयक्रा उज मान... सन...
 व... ला...
 उज मान न...
 व...
 क...
 य...
 अ...
 ल...

[illegible][illegible]



[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to poor scan quality.]

वनशि॥ अ० पा० म० शि॥ या० न० शि॥ ॥ सोम० न० शि॥ वा० न० वा० ना० खी० अ० न० प० ज० य० व० न० म० ग० लि० ज० श०
 काल० म० शु० सु० लि० सु० लि० २॥ ॥ ७० ना० क० व० म० हा० म० स० लि० य० सु० म० सु० ख० ॥ खाल० पा० शो० क० ॥ न० प० क० ज० न० नो० लि० क०
 ना० प० न० क० श० न० व० हा० ल० स० क० ॥ शो० खी० न० या० अ० सु० लि० क० क० म० ॥ न० ला० म० क० सु० ली० ॥ ल० व० व० ॥ क० पू० लि० ॥ जि० न० शो० लो० म०
 न० व० ॥ पि० य० लि० ॥ सु० धि० ॥ ह० ल० उ० ॥ व० ह० ल० उ० ॥ अ० म० नो० वा० ला० क० ॥ मि० वा० लि० ॥ य० मे० मि० डि० ॥ म० खा० म० खा० उ० मि० डि० ॥ म० शो०
 द० का० ॥ न० द० वा० ॥ म० वा० ल० ॥ म० य० ॥ न० क० च० न० द० ॥ म० म० म० ली० खा० ॥ पे० क० ॥ अ० ना० ॥ हा० म० प० ख० ॥ ज० लि० शो० ल० सु० ना० म० ख० न० ॥ क०
 सु० रि० ॥ क० य० रि० क० क० म० ॥ अ० सु० लि० ॥ मि० न० ॥ वा० ल० ॥ ज० ना० म० शि० ॥ य० न० ना० शो० क० ग० ना० ॥ ॥ ख० उ० म० ग० म० क० म० ली० क० ॥ ली० म०
 रि० व० ॥ न० वा० ना० म० न० व० ॥ न० लि० क० ना० ॥ नि० या० दो० र० ॥ १००० ॥ नी० या० अ० क० न० १००० ॥ क० ना० द० या० न० का० न० शो० स० म० न० शो०
 यो० ला० ॥ ली० या० न० ॥ म० न० व० ॥ पि० य० लि० ॥ सु० ॥ मि० द० लो० ॥ ल० व० व० ॥ जी० न० शो० ल० ॥ न० ला० ॥ सु० क० म० यो० ल० ॥ यी० ध० ॥ शो० वा० क० ल०

मा० हा० ना० ॥ य० न० वा० स० ल० ॥ श्री० सु० ००२० मा० य० सु० क० ३॥ य० क० द० वा० य० अ० न० का० शो० म० लि० पि० डि० उ० य० न० ना० ज० ॥ सु० रा० ॥
 उ० न० म० ॥ व० लि० का० य० न० म० ॥ अ० को० को० ल० स्वा० ह० ॥ स० र्य० या० ॥ हा० ही० द० सु० स्वा० ह० ॥ म० ग० ल० या० ॥ म० स्वा० लो० ॥
 वृ० ध० या० ॥ नो० जी० जू० म० ॥ जी० वा० य० स्वा० हा० वृ० ह० स्य० मि० या० ॥ म० मि० सु० म० स्वा० लो० ॥ म० लि० यो०
 न० यो० ज० प० ॥

